JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोध आलेख

डॉ. गोरधनसिंह शेखावत रै काव्य मांय राजनीतिक चेतना

सिया चौधरी

शोधार्थी–राजस्थानी
महाराजा गंगा सिंह विश्वविधालय
बीकानेर (राज.)
ग्राम–पोस्ट : भढाडर, जिला–सीकर (राज.)
332315

साहित्य समाज रो अंग व्है, जुग सापेक्ष व्है, इण कारण सामयिक थितियां रो असर साहित्य माथै भी पड़ै। रचनाकार जद रचना करै तो वो आपरै जुगबोध सूं अळगो नीं रैय सकै, उणरै जुग रो साच किणी न किणी रूप मांय उण री रचना मांय परतख व्है ईज है। वो समाज मांय जिको कीं निरखै–परखै है, उणनै आपरी रचना रो विसै बणावै। राजनीति रो सीधो जुड़ाव समाज सूं व्है है, इण वास्तै कवि रो संबंध प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप सूं राजनीति सूं भी जुड़ जावै, इण सूं जिकी पीड़ा अर घुटण वो अणभव करै वा फगत उण री नीं व्हैय'र आखै समाज री व्है।

राजस्थानी साहित्य मांय राजनीतिक चेतना रा सुर सदा सूं ई मुखरित व्हैता रैया है। राजस्थानी कवि–लेखक आपरै साहित्य रै मारफत समाज री राजनैतिक परिस्थितियां, वांरी कमजोरियां अर बुराइयां नै उजागर कर जनता नै आपरा अधिकारां वास्तै जागरूक करता रैया है। आजादी सूं पैली राजनीतिक चेतना राष्ट्रीयता, अंगरेजी सासन अर सोसण रो विरोध, देस भगती, स्वाभिमान आद सूं जुड़ियोड़ी ही, पण आजादी रै पछै रा दौर मांय जिण भांत सत्ता परिवर्तन व्हियो अर आजादी सूं मोहभंग री थितियां उपजी, उणरो असर अठै रा लिखारां माथै भी पड़ियो। आजादी रै पछै प्रजातंत्र री थरपना होयी, पण इण सूं आम मिनख नै कोई खास फायदो नीं मिल सक्यो अर उण री उम्मीद टूटगी, जिण रो कारण हो सत्ताधारी नेतावां रो जनता रै प्रति कर्तव्य नै भूल'र राजनीति नै आपरी स्वारथपूरती रो साधन बणा लेवणो। अैड़ा बगत मांय अठै रा कवि चुप नीं रैय सकता हा। राजनीति रै इण कूड़–कपट नै साम्हीं लावण वास्तै वै बरोबर आपरी लेखनी चलायी अर आपरै लेखन सूं जनचेतना फैलावण रो कारज करियो।

डॉ. गोरधनसिंह शेखावत राजस्थानी साहित्य मांय आधुनिक भावबोध रा मानीता रचनाकार हा। आपरो जलम शेखावाटी अंचळ रा झुंझुनूं जिला रै गुड़ा गांव मांय 10 अप्रैल, 1941 ई. नै व्हियो। आप राजस्थानी साहित्य री नूंवी कविता रा पैली पांत रा कवि हा। तेजसिंह जोधा रै संपादन मांय नूंवी विचारधारा री अैतिहासिक पत्रिका 'राजस्थानी–अेक' निकळी, जिकी नूंवी कविता रै संदर्भ मांय अेक नूंवा आंदोलण री सरुआत ही। इण मांय उण बगत रा पांच नूंवा कवि– तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, मणि मधुकर, ओंकार पारीक अर डॉ. गोरधनसिंह शेखावत सामल हा। नूंवी कविता नै थापित करण मांय इण पत्रिका री मोटी भूमिका रैयी। आज भी जद नूंवी कविता री बात चालै, इण पोथी माथै चरचा जरुर व्है।

डॉ. शेखावत अेक सजग कवि रै साथै अेक संवेदनशील मिनख हा। आपरो लेखन अर चिंतन सदीव सामाजिक सरोकारां सूं जुड़ियोड़ो रैयो। आप रै अणभव अर संवेदना सूं आपरो जुड़ाव मानवमूल्यां सूं रैयो अर इण मानवीय जथारथ नै साम्हीं लावण री खेचळ भी आप करता रैया। लेखक जिण समाज मांय रैवे, जिण भांत री अबखायां मांय जीवै, उणरो जथारथ चित्रण उणरै लेखन मांय सहजां प्रगट व्है। वांरो साहित्य भी जुगचेतना सूं रातो–मातो है।

डॉ. गोरधनसिंह शेखावत री कविता री तीन पोथ्यां छपियोड़ी है– 'किरकर', 'पनजी मारू' अर 'खुद सूं खुद री बातां'। आं तीनूं पोथ्यां मांय आपरी राजनीतिक चेतना भोत ई गैराई सूं साम्हीं आवै। 'किरकर' मांय 'मिनी कवितावां' है जिकी कम सबदां मांय आपरी बात नै सपाट तरीकै सूं कैवण री खिमता राखै है। इण कवितावां मांय कैयी कवितावां मंगसा पड़ता मानवीय रिस्ता अर जीवण री अबखायां नै साम्हीं लावै, बठै ई समाज अर राजनीति रा बिगड़ता हालातां नै भी जिण ढंग सूं परौटे, वो न्यारो–निरवाळो ईज है। समकालीन राजनीति रो जिको परिवेस हो, उण माथै व्यंग्य करता आप लिख्यो है :

सरेआम लोगां रै मुंडा आगै
ईमान री अरथी नै
खूंअै माथै उठाय'र भागती टोळी
अर गीलै अंधारै मांय
खोज सूंघती जनता भोळी। [1]

आजादी रै पछै रो जिको बगत हो वो राजनीतिक उथळ–पुथळ रो हो। इण बगत नै डॉ. शेखावत आपरी निजरां सूं देख्यो अर परख्यो है, जिणरो असर आपरै लेखन माथै भी पड़ियो। आप अेक शिक्षक होवण रै साथै ई अेक लेखक भी हा, इण वास्तै बदळती राजनीतिक थितियां सूं निरपेख नीं रैय सकता हा। आपरो लेखन राजनीतिक अव्यवस्था सूं बाथैड़ा करतो लखावै। देस आजाद व्हियां नै कीं दसक ई बीत्या हा, पण फेर भी राजनेतावां री कुटळाई सूं जनता आखती व्हैय चुकी ही अर आम लोग ठगीज्योड़ा मैसूस करै लागा हा। वांनै आस ही कै आजादी रै पछै वांरी हालत सुधर जावैला, वांनै सोसण सूं मुगती मिलैला अर समानता, न्याय अर आजादी रो असल अणभव व्हैला। पण औ सुपनो बेगो ई फीको पड़ग्यो। जिण भरोसै माथै आजादी री थरपना व्ही ही, उणरी जमीन अब तिड़कण लागी ही। 'पनजी मारू' पोथी मांय आप खुद इण भरोसै रै डूंगर नै तोड़ण री बात करी है :

म्हैं खुद कैवूं
तोड़ो ईं भरोसे रै डूंगर नै
ईं रै माथै चढतां–चढतां
गोडा रै मांय पाणी भरीजगो। [2]

डॉ. गोरधनसिंह शेखावत ग्रामीण संवेदना रा कवि हा। गांव आपरै चित्त मांय सदा रैयो। पण आजादी रै पछै गांवां री थितियां मांय जिका बदळाव आया, चुनावी राजनीति रै कारण लोकतंत्र री जिकी दसा व्ही अर गांवां रो परिवेस बिगड़ियो, उणरी चिंता आपरी कविता रो मूळ सुर बणगी। इण सूं उपजी सामाजिक विडरूपता अर गांवांई जीवण री अबखायां नै आपरै न्यारै ढाळै सूं प्रस्तुत करणै री खिमता आपरी कवितावां मांय निजर आवै :

आजादी रै अत्ता बरस पछै
मांदो है ओ गांव
खून सूं भरियोड़ी है
इण री गळियां
धूजै रोज मिनखपणो
पेट रै भंगज सूं
सिळगै लोगां रो अंतस। [3]

डॉ. शेखावत आपरै बगत रै सामाजिक अर राजनीतिक माहौल नै गैराई सूं परख्यो है अर उण सूं उपजी विसंगतियां नै साम्हीं लावण री खेचळ करी है। आपरै लेखन मांय अेक साच है, जिणसूं पाठक कविता रा सबद ई नीं बांचै, उणरी भावनावां नै भी मैसूस कर सकै। आप समकालीन मुद्दां नै उठाया, नूंवी अर ओपती ओपमावां रै जरियै वांनै साम्हीं राखी, जिणसूं आपरी रचनावां घणी प्रभावसाली बणी है।

डॉ. शेखावत री कवितावां मांय समकालीन राजनीतिक थितियां सारू अेक रोस है, जिको व्यंग्य रै रूप मांय प्रगट व्है है। जिण भांत चारूं कांनी लोकतंत्र रै नांव माथै जनता लूटीज रैयी है अर राजनेता कुरसी री चावना में ओछी राजनीति कर रैया है, उण सूं प्रजातंत्र माथै भी सुवाल उभा व्है जावै है।अैड़ा ही सुवाल डॉ. शेखावत 'पनजी' रै ओळावै पूछै :

कुणसी बोरड़ी रै
लागै पिरजाततंर
बूझाआळा नै पूछूं
या रंगू स्यामी नै
इण रो मंतर। [4]

सत्ता किणरी भी हुवो, बा हमेसा जनता पर आपरो नियंत्रण थापित करणो चावै। 'जनसेवक' नै जनता चुणै पण ज्यूं ई 'जनसेवक' सत्ता मांय आवै, वै आपरी मूळ जिम्मेवारी सूं अळगा होय'र स्वारथ री राजनीति मांय रम जावै। जनता रै हितां री अणदेखी व्हैण लाग जावै। जद इण भांत सत्ता रो दुरूपयोग व्है तो समाज मांय असंतोख अर विद्रोह री लै'र उठै। औ असंतोख जनता री अवाज बण साम्हीं आवै अर समकालीन साहित्य मांय साफ–साफ झळकै। डॉ. शेखावत री कवितावां मांय भी आं थितियां सारू असंतोख साव देख्यो जाय सकै है। आपरी 'स्याबास' कविता इण रो अेक उदारण है :

भायला! गजब है थूं
अर अजब है थारो देस
जवानी में ईं टूटग्या इण रा दांत
थूं हंसतो रैयो इणरी बोखी जबान माथै
मरोड़तो रैयो टांग
भूखां रा साथी भगवान री
अब तो झुक्याई
इण देस री कमर, पण थारो
सवारी रो सौक पूरो नीं हुयो। [5]

साहित्यकार री आ जिम्मेवारी व्है कै वो समाज री नस नै पिछाणै अर आपरी रचनावां सूं सोसण रै खिलाफ अवाज उठावै अर जनता नै भी प्रेरित करै। इण सूं ज्यादा फरक नीं पड़ै कै वा रचना किण भांत री है, पण वा समाज रै हितां री रक्षा करण आळी व्है, अन्याव रै विरोध में ऊभी व्हैण आळी व्है। डॉ. शेखावत री कविता 'मुट्ठी' भी मिनख नै उणरी भूख री ताकत नै पिछाणवा री बात करै, क्रांति री बात करै। मिनख जे चावै तो राज अर समाज नै पलट सकै है :

सोचो, पछै कांई हुवैलो
थारी मुट्ठी सूं चिमकै
चांद अर सुरजी
थारी मुट्ठी सूं धूजै
डूंगर अर आभो
थारी मुट्ठी सूं पलटै
राज अर समाज
इण वास्तै
पिछाणो मुट्ठी री ताकत
थोड़ा सावचेत बण'र। [6]

राजनीति रो चरित्र अर सियासत जैड़ी विसंगतियां सूं सामाजिक थितियां रो बिखराव अर उणसूं बदळता जीवणमूल्यां वास्तै प्रतिक्रिया डॉ. शेखावत री कवितावां मांय भोत गैराई सूं साम्हीं आयी है। आपरी लांबी कविता री पोथी 'खुद सूं खुद री बातां' मांय आजादी रै पछै री सामाजिक अर राजनीतिक थितियां रो बखूबी बखाण है। इण कविता मांय जठै सत्ता अर अव्यवस्था रै खिलाफ विद्रोह रा सुर उठ्या है, बठै ई इण सूं दुखी जनता रै दरद नै भी वाणी दिरीजी है। इण कविता मांय जूण रै जथारथ नै जिण व्यंग्यात्मक रूप सूं आप प्रगट करियो है, वो सरावणजोग है। बोट री राजनीति माथै व्यंग्य करता वै लिख्यो :

कदै–कदै सोचूं
ओ गैलो पायचो क्यूं टांक राख्यो है
पायचा में नीं परजातंत्र
किणरै वास्तै उडीको
नेताजी री बाट
बै तो बोट रै घोड़ै चढ'र
भागगा दड़ाछंट। [7]

राजनीति रो मूळ उद्देस व्है समाज रा हर वरग नै सामाजिक अर आर्थिक रूप सूं ऊंचो उठाणो। राजनीति आम मिनख रै जीवण नै सुधारण रो अेक जरियो है, पण आज देखां तो राजनीति रो ढंगढाळो भोत न्यारो है। लोकतंत्र रै नांव माथै जनता साथै धोखो व्हियो। जननेतावां रो आम जनता रै प्रति वैवार, राजनीतिक भ्रिस्टाचार अर सत्ता री लालसा इण लोकतंत्र री मूळ भावना नै भोत सीमा तांई प्रभावित करी है। डॉ. शेखावत री रचनावां मांय लोकतंत्र री आं थितियां वास्तै अेक पीड़ा निजर आवै है। आप

लोकतंत्र रै आदरसां अर वास्तविकता रै बिचाळै री खाई नै सावचेती सूं दरसावण री खेचळ करी है। आज राजनीति भलांई कूड़ अर दोगलापण रा कादा मांय डूब री है, पण फेर भी इण कादै में कळीजण सारू जणो–जणो तरळा लेवै :

आज धरम–करम हुयगी राजनीति
रीत–नीत हुयगी राजनीति
अर बौपार बणगी राजनीति
राजनीति रै मुगट री लड़ाई में जूझ रैया
सैर, गांव अर ढाणी
तरळा लेवै जणो–जणो
राजनीति रै कादै नै खावण सारू। [8]

डॉ. शेखावत रै काव्य में राजनीतिक चेतना अठै सुभट निजर आवै है। राजनीति रा जाळ मांय उळझियोड़ै मिनख री मनगत नै आप पिछाणी है। आ कविता जठै सत्ताधारी राजनेतावां रा स्वारथ नै उजागर करै, स्वारथी सियासत रो विरोध करै, बठैई मिनख रै मिनखपणै रो पख भी लेवै। आपरी रचनावां आज री माड़ी राजनीतिक व्यवस्था री फगत आलोचना ई नीं करै, समाज नै सोचण अर बदळाव वास्तै प्रेरणा देवण रो कारज भी करै। मिनख नै खुद आपरी हिम्मत सूं ई जुगां सूं बंध्योड़ा दावणां खोलणा पड़सी :

पण म्हैं अेक चीज चूकूं नीं
हिम्मत
इण सूं ई खोलणां पड़सी जुगां रा दावणां
झंझट सूं डरणो कांई
कदै पंथी तो कदै पांवणा
अब तो थरपणी पड़सी
खून–पसीना सूं मिनख री मूरत। [9]

सार रूप मांय कैय सकां कै डॉ. गोरधनसिंह शेखावत अेक कवि रै रूप मांय हरमेस आपरी बारली थितियां सारू सावचेत रैया। आपरी काव्य जातरा मांय इस्या कैयी पड़ाव आवै जठै आपरो कवि मन आपरै असवाड़ै–पसवाड़ै घटती राजनीतिक थितियां सूं आकळ–बाकळ व्है जावै। आ भी है कै आप निसचै ई अेक चोखी राज–व्यवस्था रा हिमायती रैया हा, पण आजादी रै पछै जिको प्रजातंत्र आम मिनख रै पांती आयो, उणरो सरूप न्यारो ई हो। डॉ. शेखावत रै काव्य मांय इण लेखै निरासा साव निजर आवै है। आज भी लोकतंत्र मांय लोक री भागीदारी नीं व्हैय'र अेक वरग विसेस री भागीदारी ई रैयी है, जिका लोकतंत्र नै फगत आपरी स्वारथ री पूर्ति रो साधन बणा लियो। इण थितियां वास्तै आपरै काव्य मांय गैरो रोस अर दरद निजर आवै। आपरी कवितावां मांय आपरो खुद रो संवेदनात्मक अणभव अर झेल्योड़ै जथारथ रो दरद है, जिको आं कवितावां सूं मिनख रै मरम नै पकड़ै अर सामयिक थितियां सारू चेतावै।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, किरकर, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2005, पाना सं. 16
2. डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, पनजी मारू, भंवर प्रकाशन, गुढ़ा–झुंझुनू, 1987, पाना सं. 7
3. सागी, पाना सं. 12
4. सागी, पाना सं. 13
5. सागी, पाना सं. 22
6. सागी, पाना सं. 76
7. डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, खुद सूं खुद री बातां, भंवर प्रकाशन, गुढा–झुंझुनू, 1990, पाना सं. 13
8. सागी, पाना सं.34
9. सागी, पाना सं.18